Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X **Pg. 40-43**

भारत की पाकिस्तान के प्रति विदेश नीति का बदलता स्वरूप (वर्ष 2014 से 2025 तक के विशेष संदर्भ में)

रूबी
शोधर्थिनी समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग विज्ञान विभाग समाज विज्ञान संकाय दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट इन्स्टीट्यूट , (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा दयालबाग़, आगरा

डॉ. अंजू शर्मा
पर्यवेक्षक समाजशास्त्र एवं राजनीति समाज विज्ञान संकाय दयालबाग़ एजुकेशनल (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

Accepted: 10/01/2026
Published: 19/01/2026 ***DOI: http://doi.org/ 10.5281/zenodo.18299440***

सारांश

भारत–पाकिस्तान संबंध दक्षिण एशिया की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सबसे जटिल, संवेदनशील और दीर्घकालिक द्विपक्षीय संबंधों में से एक रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से ये संबंध औपनिवेशिक विरासत, विभाजन की पीड़ा, क्षेत्रीय विवादों, विशेषकर जम्मू–कश्मीर समस्या, तथा सीमापार आतंकवाद से प्रभावित रहे हैं। स्वतंत्रता के पश्चात दोनों देशों के मध्य चार युद्ध, अनेक सैन्य टकराव, कूटनीतिक संकट और सीमित संवाद के प्रयास देखे गए हैं।

वर्ष 2014 के पश्चात भारत की पाकिस्तान के प्रति विदेश नीति में न केवल सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है, बल्कि नीति की संरचना, प्राथमिकताओं और साधनों में भी एक मौलिक परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस कालखंड में भारत की नीति संवाद-प्रधान और रणनीतिक संयम आधारित दृष्टिकोण से हटकर सशर्त कूटनीति, आतंकवाद के प्रति शून्य सहनशीलता तथा रणनीतिक प्रतिरोध (Strategic Deterrence) पर आधारित होती गई।

यह शोध-पत्र 2014 से 2025 की अवधि में भारत की पाकिस्तान नीति के बदलते स्वरूप का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में कूटनीतिक घटनाक्रम, आतंकवादी घटनाओं के आँकड़े, सैन्य प्रतिक्रियाएँ, व्यापार एवं आर्थिक संबंधों की प्रवृत्तियाँ तथा अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संदर्भों को सम्मिलित किया गया है। शोध का तर्क यह है कि भारत की नई नीति ने उसकी रणनीतिक विश्वसनीयता, प्रतिरोध क्षमता और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को सुदृढ़ किया है, किंतु औपचारिक संवाद तंत्र के सीमित होने से दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय स्थिरता के समक्ष नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं।

मुख्य शब्द :- *भारत–पाकिस्तान संबंध, विदेश नीति, आतंकवाद, रणनीतिक प्रतिरोध, सशर्त कूटनीति, दक्षिण एशिया*

1. भूमिका

भारत और पाकिस्तान का द्विपक्षीय संबंध 1947 के विभाजन के साथ ही तनाव, संघर्ष और अविश्वास की पृष्ठभूमि पर स्थापित हुआ। उपमहाद्वीप का विभाजन केवल एक भौगोलिक पुनर्संरचना नहीं था, बल्कि यह राजनीतिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विभाजन का भी प्रतीक था। विभाजन के तत्काल पश्चात उत्पन्न कश्मीर विवाद ने दोनों देशों के संबंधों को स्थायी रूप से प्रभावित किया।

1947–48, 1965, 1971 और 1999 के युद्धों ने इस द्विपक्षीय संबंध को संघर्ष-केंद्रित बना दिया। इसके साथ ही सीमापार आतंकवाद, युद्धविराम उल्लंघन और राजनीतिक अविश्वास ने संवाद की संभावनाओं को सीमित किया। यद्यपि समय-समय पर शिमला समझौता (1972), लाहौर घोषणा (1999) और समग्र वार्ता प्रक्रिया जैसी पहलें की गईं, किंतु ये प्रयास स्थायी शांति स्थापित करने में अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सके।

वर्ष 2014 तक भारत की पाकिस्तान नीति को प्रायः "रणनीतिक संयम" और "संवाद-आधारित कूटनीति" के रूप में देखा जाता था। गंभीर आतंकवादी घटनाओं के बावजूद भारत ने वार्ता के द्वार पूर्णतः बंद नहीं किए। किंतु बार-बार होने वाले आतंकवादी हमलों, सीमित कूटनीतिक प्रगति और घरेलू जनमत के दबाव के कारण नीति परिवर्तन की आवश्यकता तीव्र होती गई।

2014 के पश्चात भारत की विदेश नीति में राष्ट्रीय सुरक्षा, आतंकवाद के प्रति शून्य सहनशीलता, और सक्रिय तथा सशर्त कूटनीति को केंद्रीय स्थान दिया गया। इसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान के प्रति भारत की नीति अधिक स्पष्ट, कठोर और लक्ष्य-उन्मुख होती गई। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी परिवर्तनशील नीति का विश्लेषण करता है और इसके निहितार्थों को समझने का प्रयास करता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. वर्ष 2014 से 2025 तक भारत की पाकिस्तान नीति में आए संरचनात्मक और वैचारिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
2. कूटनीतिक, सैन्य, आर्थिक तथा सुरक्षा-संबंधी आँकड़ों के आधार पर नीति परिवर्तन की प्रकृति और दिशा को समझना।
3. आतंकवाद के प्रति शून्य सहनशीलता और रणनीतिक प्रतिरोध नीति की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
4. भारत की नई पाकिस्तान नीति के क्षेत्रीय शांति, स्थिरता और दक्षिण एशिया की सुरक्षा संरचना पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

3. शोध-पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक, विश्लेषणात्मक तथा आँकड़ा-आधारित शोध-पद्धति पर आधारित है। शोध में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें भारत सरकार के आधिकारिक वक्तव्य, विदेश मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्टें, संसदीय बहसें, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के दस्तावेज, व्यापार एवं सुरक्षा संबंधी आँकड़े तथा प्रतिष्ठित थिंक-टैंकों के विश्लेषण सम्मिलित हैं।

अध्ययन में वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण विधियों का प्रयोग किया गया है। विभिन्न कालखंडों की नीतियों की तुलना कर यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार 2014 के बाद भारत की पाकिस्तान नीति अधिक कठोर, सशर्त और सुरक्षा-केंद्रित होती गई।

4. 2014 से पूर्व भारत–पाकिस्तान संबंध (संक्षिप्त पृष्ठभूमि)

भारत और पाकिस्तान के मध्य द्विपक्षीय संबंधों की ऐतिहासिक संरचना 1947 के विभाजन के साथ ही संघर्ष, अविश्वास और अस्थिरता से जुड़ी रही है। विभाजन की हिंसा, औपनिवेशिक विरासत और जम्मू–कश्मीर जैसे विवादित मुद्दों ने दोनों देशों के बीच एक स्थायी सुरक्षा दुविधा को जन्म दिया, जिसने इनके संबंधों को टकरावपूर्ण बनाए रखा । इसके बावजूद, 2014 से पूर्व भारत की पाकिस्तान नीति का मूल आधार संवाद, विश्वास-निर्माण उपायों तथा द्विपक्षीय संस्थागत तंत्रों पर केंद्रित रहा। 1971 के युद्ध के पश्चात संपन्न शिमला समझौते ने द्विपक्षीयता के सिद्धांत को औपचारिक रूप से स्थापित किया और यह स्पष्ट किया कि दोनों देश अपने विवादों का समाधान शांतिपूर्ण तथा द्विपक्षीय माध्यमों से करेंगे। इसी क्रम में 1999 की लाहौर घोषणा को परमाणु संदर्भ में जोखिम न्यूनीकरण, सैन्य पारदर्शिता और राजनीतिक संवाद को बढ़ावा देने के प्रयास के रूप में देखा गया। भारत की नीति-दृष्टि में यह धारणा निहित रही कि निरंतर कूटनीतिक संलग्नता और संवाद के माध्यम से तनाव को नियंत्रित किया जा सकता है तथा संघर्ष को पूर्ण युद्ध में परिवर्तित होने से रोका जा सकता है।

हालाँकि, 2001 के संसद आतंकवादी हमले और 2008 के मुंबई आतंकवादी हमले ने भारत की इस संवाद-प्रधान नीति की गंभीर सीमाओं को उजागर कर दिया। इन घटनाओं ने यह स्पष्ट किया कि सीमापार आतंकवाद भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक संरचनात्मक चुनौती बना हुआ है और केवल कूटनीतिक संवाद इसके समाधान हेतु पर्याप्त नहीं है। इसके बावजूद भारत द्वारा संवाद को पूर्णतः समाप्त न करना उस नीति को प्रतिबिंबित करता है, जिसे विद्वानों ने "रणनीतिक संयम" के रूप में परिभाषित किया है अर्थात् गंभीर उकसावे के बावजूद सैन्य escalation से परहेज

करते हुए कूटनीतिक और राजनीतिक साधनों को प्राथमिकता देना। किंतु इन आतंकवादी घटनाओं के पश्चात घरेलू स्तर पर यह धारणा मजबूत होती गई कि संवाद और संयम की नीति पाकिस्तान को अपने व्यवहार में परिवर्तन के लिए बाध्य करने में असफल रही है। राजनीतिक, रणनीतिक और सार्वजनिक विमर्श में बढ़ती यह आलोचना 2014 से पूर्व भारत की पाकिस्तान नीति को एक वैचारिक संक्रमण की स्थिति में ले आई, जिसने अंततः 2014 के बाद अधिक सशर्त, कठोर और सुरक्षा-केंद्रित नीति के उद्भव की पृष्ठभूमि तैयार की।

5. 2014–2025 के दौरान भारत की पाकिस्तान नीति का बदलता स्वरूप

5.1 कूटनीति में परिवर्तन (संवाद और शर्तें)

2014 के पश्चात भारत ने पाकिस्तान के प्रति सशर्त कूटनीति को प्राथमिकता दी। भारत ने यह स्पष्ट किया कि आतंकवाद और वार्ता एक साथ नहीं चल सकते। आतंकवादी घटनाओं के पश्चात उच्च-स्तरीय वार्ताओं को स्थगित करना इस नीति का प्रमुख संकेत था।

तालिका 1: 2014–2025 के दौरान प्रमुख कूटनीतिक घटनाएँ

वर्ष	घटना	परिणाम
2014	क्षेत्रीय सम्मेलन में आमंत्रण	प्रारंभिक सकारात्मक संकेत
2015	द्विपक्षीय वार्ता	आतंकवादी घटना के बाद स्थगन
2016	कूटनीतिक दूरी	वार्ता पूर्णतः ठप
2019	संकटकालीन संपर्क	सीमित कूटनीति
2021–25	बैक-चैनल संपर्क	औपचारिक संवाद का अभाव

5.2 आतंकवाद के प्रति शून्य सहनशीलता नीति

इस अवधि में आतंकवाद भारत की पाकिस्तान नीति का केंद्रीय तत्व बन गया। भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का मुद्दा प्रमुखता से उठाया। आतंकवाद को केवल द्विपक्षीय विवाद न मानकर वैश्विक सुरक्षा से जोड़ने की रणनीति अपनाई गई।

तालिका 2: आतंकवादी घटनाएँ और कूटनीतिक प्रभाव

अवधि	घटनाएँ	प्रभाव
2014–16	आतंकी व सीमा घटनाएँ	संवाद स्थगन
2017–18	सीमापार तनाव	अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति
2019	गंभीर संकट	संबंध न्यूनतम स्तर
2020–25	छिटपुट घटनाएँ	स्थायी अविश्वास

5.3 सैन्य प्रतिक्रियाएँ और रणनीतिक प्रतिरोध

इस कालखंड में भारत की नीति में रणनीतिक प्रतिरोध का तत्व स्पष्ट रूप से उभरा। सीमित सैन्य कार्रवाई को प्रतिरोध और संदेशात्मक साधन के रूप में प्रयोग किया गया। यह नीति पूर्ण युद्ध से बचते हुए दबाव बनाने की रणनीति को दर्शाती है।

5.4 जम्मू–कश्मीर नीति और द्विपक्षीय संबंध

जम्मू–कश्मीर के प्रशासनिक पुनर्गठन को भारत ने आंतरिक मामला घोषित किया और किसी भी बाहरी मध्यस्थता को अस्वीकार किया। इस निर्णय ने भारत–पाकिस्तान संबंधों को और अधिक जटिल बना दिया तथा द्विपक्षीय तनाव को नई दिशा प्रदान की।

5.5 आर्थिक और व्यापारिक संबंध

2014 के बाद भारत–पाकिस्तान व्यापार में निरंतर गिरावट देखी गई। सुरक्षा-केंद्रित नीति और राजनीतिक तनाव का सीधा प्रभाव व्यापारिक संबंधों पर पड़ा।

तालिका 3: भारत–पाकिस्तान व्यापार (अरब अमेरिकी डॉलर)

वर्ष	व्यापार (अरब अमेरिकी डॉलर)
2013	2.6
2016	2.2
2019	1.5
2022	1.0 से कम
2025	अत्यंत सीमित

6. अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य

भारत की पाकिस्तान नीति को उसकी व्यापक वैश्विक रणनीति और उभरती अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका से पृथक नहीं किया जा सकता। 2014 के पश्चात भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ, रूस तथा इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के देशों के साथ रणनीतिक साझेदारियों को सुदृढ़ किया, जिससे उसकी कूटनीतिक स्थिति मजबूत हुई। आतंकवाद के प्रश्न पर भारत ने इसे वैश्विक सुरक्षा चुनौती के रूप में प्रस्तुत करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय कूटनीति अपनाई, जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद के विरुद्ध भारत को बढ़ता अन्तर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त हुआ।

क्षेत्रीय स्तर पर, भारत ने दक्षिण एशिया में अपनी भूमिका को पुनर्परिभाषित करते हुए बहुपक्षीय सहयोग और संपर्क परियोजनाओं पर बल दिया, यद्यपि भारत–पाकिस्तान संबंधों में द्विपक्षीय संवाद सीमित बना रहा। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा भारत के सुरक्षा सरोकारों को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया, किंतु साथ ही संयम, तनाव-नियंत्रण और संवाद

बनाए रखने की अपीलें भी निरंतर की जाती रहीं। इससे स्पष्ट होता है कि भारत की पाकिस्तान नीति अन्तर्राष्ट्रीय समर्थन तो अर्जित करने में सफल रही, परंतु क्षेत्रीय स्थिरता के लिए संतुलित कूटनीतिक प्रयासों की आवश्यकता बनी हुई है।

7. विश्लेषणात्मक विवेचना

भारत की पाकिस्तान के प्रति बदली हुई विदेश नीति को यथार्थवादी अन्तर्राष्ट्रीय संबंध सिद्धांत के माध्यम से प्रभावी रूप से समझा जा सकता है, जिसमें शक्ति, सुरक्षा और राष्ट्रीय हित को केंद्रीय महत्व दिया जाता है। 2014 के पश्चात भारत ने सीमापार आतंकवाद को प्रत्यक्ष सुरक्षा चुनौती के रूप में परिभाषित करते हुए रणनीतिक संयम के स्थान पर प्रतिरोध और दबाव को नीति के प्रमुख उपकरण के रूप में अपनाया। इसके साथ ही, रणनीतिक स्वायत्तता के सिद्धांत के अंतर्गत भारत ने पाकिस्तान से जुड़े मुद्दों को द्विपक्षीय और आंतरिक विषय घोषित करते हुए बाहरी मध्यस्थता को अस्वीकार किया, जिससे उसकी निर्णय-निर्माण क्षमता और अन्तर्राष्ट्रीय विश्वसनीयता सुदृढ़ हुई।

इस नीति का तीसरा महत्वपूर्ण आयाम दबाव-आधारित कूटनीति रहा, जिसमें सीमित और नियंत्रित बल प्रयोग के माध्यम से राजनीतिक संदेश देने का प्रयास किया गया। यह रणनीति अल्पकाल में भारत की प्रतिरोधक क्षमता को सुदृढ़ करने में प्रभावी रही, किंतु औपचारिक संवाद तंत्र के संकुचन और बढ़ते अविश्वास के कारण दीर्घकालिक क्षेत्रीय शांति की संभावनाएँ सीमित होती प्रतीत होती हैं। अतः स्थायी शांति के लिए प्रतिरोध के साथ-साथ संवाद के वैकल्पिक और नवाचारी तंत्रों की आवश्यकता बनी हुई है।

8. निष्कर्ष

2014 से 2025 का कालखंड भारत की पाकिस्तान नीति में एक निर्णायक मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। इस अवधि में भारत ने संवाद-प्रधान दृष्टिकोण से हटकर सशर्त, सुरक्षा-केंद्रित और रणनीतिक प्रतिरोध आधारित नीति अपनाई। इस नीति ने भारत की प्रतिरोध क्षमता, रणनीतिक विश्वसनीयता और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को सुदृढ़ किया है। हालाँकि, औपचारिक संवाद तंत्र के संकुचन और बढ़ते अविश्वास ने दक्षिण एशिया में स्थायी शांति की संभावनाओं को जटिल बना दिया है। अतः भविष्य में आवश्यक होगा कि भारत प्रतिरोध और संवाद के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए दीर्घकालिक विश्वास-निर्माण की दिशा में यथार्थवादी और बहुस्तरीय प्रयास करे।

सन्दर्भ सूची

Bajpai, K. (2021). *India's foreign policy: A theoretical overview*. Oxford University Press.

Bajpai, K., Basit, S., & Krishnappa, V. (2014). *India–Pakistan relations: Theories, events and issues*. Routledge.

Bose, S. (2003). *Kashmir: Roots of conflict, paths to peace*. Harvard University Press.

Cohen, S. P. (2013). *Shooting for a century: The India–Pakistan conundrum*. Brookings Institution Press.

Ganguly, Š. (2016). *Deadly impasse: Indo-Pakistani relations at the dawn of a new century*. Cambridge University Press.

Ganguly, Š., & Hagerty, D. T. (2005). *Fearful symmetry: India–Pakistan crises in the shadow of nuclear weapons*. Oxford University Press.

Ganguly, Š., & Kapur, S. P. (2010). *India, Pakistan, and the bomb: Debating nuclear stability in South Asia*. Columbia University Press.

Jaishankar, S. (2020). *The India way: Strategies for an uncertain world*. HarperCollins India.

Mearsheimer, J. J. (2001). *The tragedy of great power politics*. W. W. Norton & Company.

Ministry of External Affairs (MEA), Government of India. (2016). *Annual report 2015–16*. Government of India.

Ministry of External Affairs (MEA), Government of India. (2019). *Annual report 2018–19*. Government of India.

Ministry of External Affairs (MEA), Government of India. (2022). *Annual report 2021–22*. Government of India.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****